B.A.I. Honours, Sociology — Session 19–20

सामाजिक गतिशीलता भारतीय समाज के संदर्भ में

भारत में दोनों ही प्रकार की गतिशीलता पायी जाती है। परन्तु उदग्र गतिशीलता के उदाहरण यहाँ कम मिलते हैं। जबकि क्षैतिज गतिशीलता तथा उसके विभिन्न स्वरूपों का प्रचलन अधिक है। भारत में प्रजातंत्र की स्थापना के पश्चात गतिशीलता में वृद्धि हुई है। नगरीकरण, उद्योगीकरण एवं शिक्षा के प्रसार ने सामाजिक गतिशीलता को अधिक प्रोत्साहित किया। गाँवों में प्रदत्त प्रस्थिति का अधिक महत्व है और गतिशीलता में बाधा उत्पन्न करती है। इसके स्थान पर नगरों में अर्जित प्रस्थिति का महत्त्व अधिक है। यहाँ व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी जाति, परिवार, गोत्र आदि से न कर उसकी शिक्षा, योग्यता और गुणों के आधार पर किया जाता है। यहाँ व्यक्तियों में उच्च महत्वाकांक्षाएं पायी जाती हैं और उन्हें पाने के लिये वे प्रयत्नशील भी रहते हैं। सामाजिक गतिशीलता उत्पन्न करने के लिये नगरों में घटित होने वाले सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं भी उत्तरदायी हैं। नगर के लोगों में सामाजिक संस्तरण की सीढ़ियों को लांघ कर ऊँचा उठने की तीव्र इच्छा होती है। जिससे कि वह अधिक धन एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके।

Scanned by CamScanner

भारत में रैखिक गतिशीलता कम पायी जाती है क्योंकि जाति व्यवस्था के प्रचलन के कारण हमारे समाज में इस प्रकार की गतिशीलता के अवसर नहीं पाये जाते हैं। जातिय कठोरता के बावजूद भी समय समय पर मध्य स्तर की जातियों में जाति संस्तरण में ऊँचा उठने का प्रयत्न किया है। Dr. M.N. Srinivas ने इस प्रक्रिया को 'संस्कृतीकरण' (Sanskritization) का नाम दिया है।

भारत में सामाजिक गतिशीलता की स्थिती का समाजशास्त्रीयों ने विस्तृत अध्ययन किया है। उनके अध्ययनों का आधार पर यह विचार किया जा सकता है कि भारत में क्षैतिज एवं उच्चगामी दोनों ही प्रकार की सामाजिक गतिशीलता पायी जाती है। इतना अवश्य है कि यहाँ उर्ध्वगामी गतिशीलता तुलनात्मक दृष्टि से एक छोटे समूह तक ही ~~सी~~ सीमित है। जो उच्च शिक्षा प्राप्त हैं लेकिन यह समूह वर्गसोपान में ऊपर उठने में समर्थ है। चाहे जातीय सोपान में उसकी स्थिती कैसे ही क्यों ना हो लेकिन भारत में साक्षरता की धीमी प्रगति और लोगों द्वार नए नए उद्योगों की स्थापना में पहल के अभाव के कारण भारत का

Scanned by CamScanner

विस्तृत जन समूह न केवल गरीब है, बल्कि साथ ही जातीय परम्पराओं से जुड़ा हुआ है।

समाजिक गतिशीलता के अच्छे बुरे दोनों ही परिणाम हो सकते हैं। अच्छा परिणाम यह है कि इससे योग्य व्यक्ति उच्च स्थान प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। लोगों को प्रयत्न करने की प्रेरणा मिलती है। समाज में विकास का मार्ग प्रशस्त होता है, प्रगति के अवसर बढ़ते हैं, परम्परात्मक एवं विकासशील समाजों में पिछड़े लोगों के लिये कल्याणकारी कार्य करके उन्हें आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है।

कभी-कभी समाजिक गतिशीलता के दुष्परिणामों के लिए भी उत्तरदायी होती है। जैसे कुछ लोग अगर समाज में ऊंचा उठना चाहते हैं और अगर लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है तो वह समाज में विरोधी रूख अपना लेते हैं; गतिशीलता होड़ में लगे लोग अनावश्यक रूप से परिश्रम और चिन्तित रहने लगते हैं।

इस प्रकार गतिशीलता आधुनिक युग में प्रत्येक समाज की अनिवार्य आवश्यकता हो गयी है।

—x—

Scanned by CamScanner